मासिक समाचार पत्र

परिसर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

विशेषांक
अगस्त 2024
(फोटो फीचर)

युवा जागरूकता कार्यक्रम

प्रोफेसर पवन सिन्हा गुरुजी

अध्यात्म की चेतना से ऊर्जा का संचार

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल और पावन चिंतन धारा आश्रम ने आयोजित किया युवा जागरूकता कार्यक्रम

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला

अनमोल वचन

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल ने पावन चिंतन धारा आश्रम के सहयोग से 9 अगस्त को युवा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। नेताजी सुभाष बोस सभागार में हुए आयोजन में युवाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। इस दौरान युवाओं को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला, पूर्व कुलपति प्रोफेसर एनके तनेजा और प्रोफेसर पवन सिन्हा गुरुजी के मूल्यवान विचार सुनने का अवसर मिला।

पूर्व कुलपति प्रोफेसर एनके तनेजा

युवा जोश। प्रोफेसर पवन सिन्हा गुरुजी को सुनने के लिए नेताजी सुभाष बोस सभागार में भारी संख्या में उपस्थित स्कूल–कॉलेजों के विद्यार्थी और गण्यमान्य अतिथिगण।

शहर में चर्चा : युवा जागरूकता कार्यक्रम के होर्डिंग महानगर में अनेक स्थानों पर लगाए गए। लोग इन्हें देखते और कार्यक्रम की चर्चा करते नजर आए।

नारद
एक संवाददाता

युवा जागरूकता कार्यक्रम में देवर्षि नारद पर एक अत्यंत रोचक नाटक खेला गया। इसका लेखन और मंचन तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के छात्र–छात्राओं ने किया। इसमें दिखाया गया कि किस प्रकार से नारद मुनि एक लोक से दूसरे लोक में समाच. ारों का आदान–प्रदान करते थे और क्यों उन्हें आदि संवाददाता कहा जाता था। यह भी दर्शाया गया कि समाचार संप्रेषण के दौरान नारद जी किस प्रकार निष्पक्षता का व्यवहार करते थे और पीड़ित के पक्ष में खड़े होते थे।

अभिनय| नाटक के मंचन के दौरान अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते छात्र–छात्राएं।

नाटक में भाग लेने वाले कलाकार एक साथ।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक** : प्रोफेसर प्रशांत कुमार, **संपादकीय सलाहकार** : डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ. बीनम यादव, **संपादक** : लव कुमार सिंह, **संपादकीय टीम** : बीएजेएमसी और एमएजेएमसी के छात्र–छात्राएं।

प्रचार अभियान : कार्यक्रम की तैयारी काफी पहले से शुरू कर दी गई थी। इस दौरान तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के छात्र–छात्राओं ने लोगों को कार्यक्रम के बारे में बताने के लिए प्रचार के कई तरीके अपनाए।

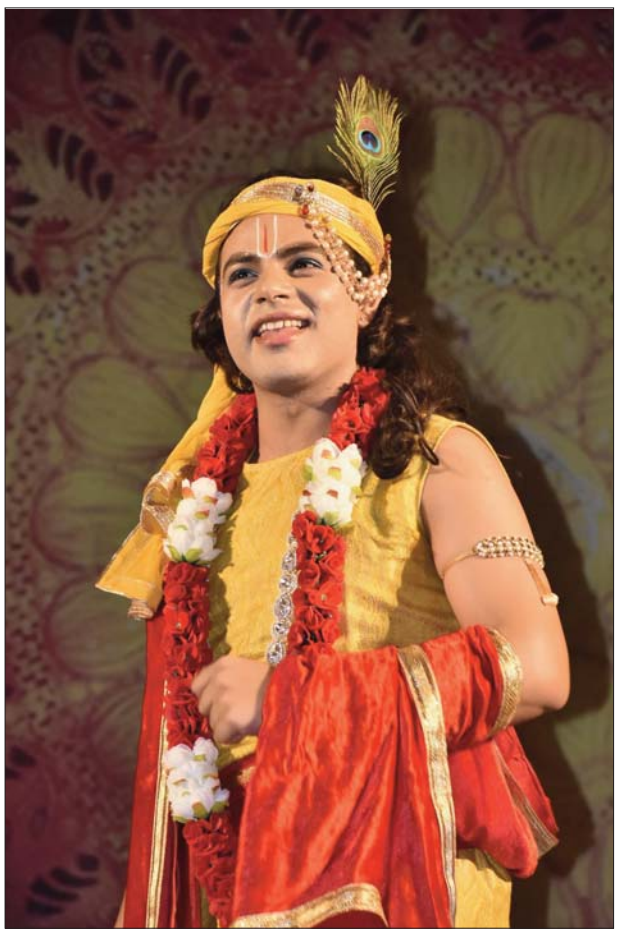

कृष्ण

युवा जागरूकता कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण था करीब एक घंटे का नाटक 'कृष्ण'। पावन चिंतन धारा के मंझे हुए कलाकारों ने इस नाटक में अपनी अभिनय कला के अनेक रंग बिखेरे और दर्शकों को भाव विभोर कर दिया। इस नाटक के मंचन के दौरान कई दर्शकों की आंखें नम होती भी देखी गईं। नाटक से न केवल युवाओं का मनोरंजन हुआ बल्कि उन्होंने श्रीकृष्ण के जीवन के कई प्रसंगों से जीवन जीने के सबक भी ग्रहण किए।

आरती नाटक के अंत में जब कृष्ण की आरती की गई तो समूचा सभागार भक्ति के सागर में डूब गया।

पावन चिंतन धारा आश्रम के वे कलाकार एक साथ जिन्होंने 'कृष्ण' नाटक में अभिनय किया।

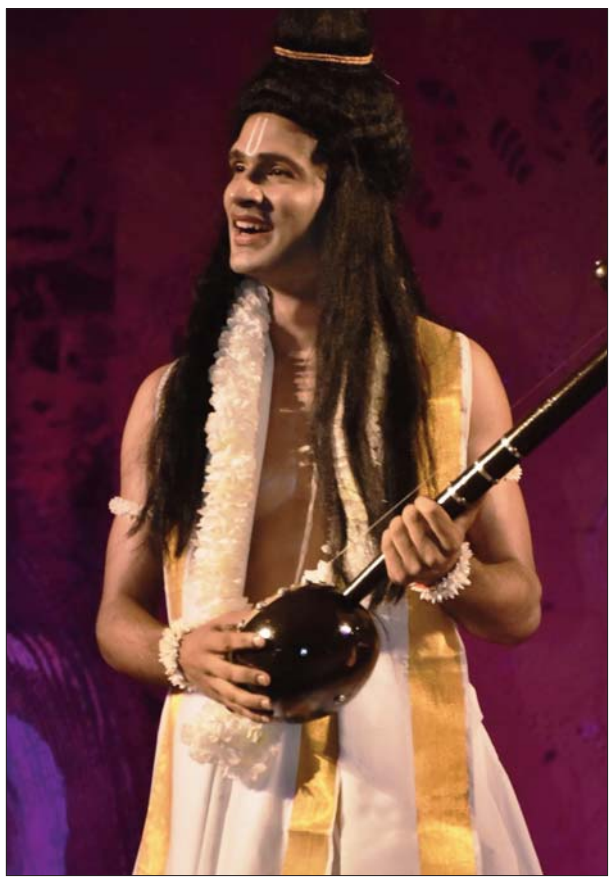

कुशल संचालन : नेताजी सुभाष बोस सभागार में डॉ. बीनम यादव ने युवा जागरूकता कार्यक्रम के दौरान भारी संख्या में मौजूद युवाओं को पल–पल जरूरी निर्देश देते हुए आयोजन का कुशल संचालन किया।

अतिथि

शुभारंभ

सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित करते प्रोफेसर पवन सिन्हा गुरु जी। साथ हैं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला और पूर्व कुलपति प्रो. एनके तनेजा।

पावन चिंतन धारा आश्रम के संस्थापक प्रोफेसर पवन सिन्हा गुरुजी कार्यक्रम के बाद तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में भी पधारे।

आयोजन के मुख्य शिल्पी तिलक पत्रकारिता स्कूल के निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार (दाएं) और पावन चिंतन धारा आश्रम के ज्ञानेंद्र जी।

भारतीय ज्ञान सार्वकालिक है

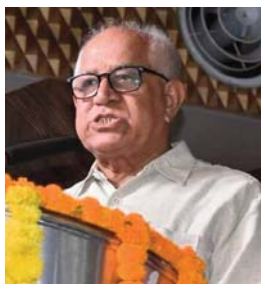

नई शिक्षा नीति 2020 ने दो मुख्य तत्वों को रेखांकित किया है। एक शिक्षा और दूसरा भारतीय संस्कृति पर गर्व व बहुमुखी प्रतिभा का विकास। नई शिक्षा नीति से हमारी प्राचीन और समृद्ध धरोहर को लोग जान सकेंगे। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय इस कार्य को अच्छी प्रकार से संपादित कर रहा है। भारतीय ज्ञान सार्वकालिक है। इसमें जो भी कहा गया है वह प्रासंगिक है। श्रीकृष्ण ने जो हजारों साल पहले कहा वह आज के दौर में भी उतना ही प्रासंगिक और सभी को मार्गदर्शन देने वाला है। **(पूर्व कुलपति प्रो. नरेंद्र कुमार तनेजा का उद्बोधन)**

कर्तव्य से ही जुड़ा है धर्म

श्रीराम, श्रीकृष्ण, पांडव और लव–कुश ने भी गुरुकुल और आश्रम में ही शिक्षा दीक्षा ली थी। आज के युवा दुनिया की चकाचौंध में खोए हुए हैं। धर्म कर्तव्य से ही जुड़ा होता है। पावन चिंतन धारा के प्रकल्प सभी को एक सूत्र में बांधने का काम करते हैं।

(गुरु मां डॉ. कविता अस्थाना का उद्बोधन)

गीता से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता

भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। नारद जी के जीवन से भी हमें प्रेरणा मिलती है। श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीता का संदेश हम सभी को पढ़ना चाहिए। उनसे बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। आप सभी युवा विश्वविद्यालय की धरोहर हैं। भविष्य में आप भी इसी विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए आएंगे।

(कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला का उद्बोधन)

रील नहीं रियल स्टोरी से जिंदगी को जोड़ें

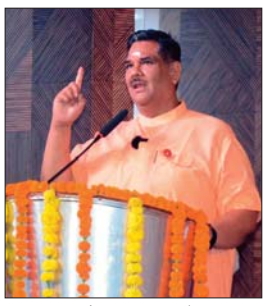

अपना व्यक्तित्व विकसित करें। लक्ष्य के लिए एकाग्र रहकर निरंतर आगे बढ़ें। मोबाइल से बाहर निकलें। रील नहीं रियल स्टोरी से जिंदगी को जोड़िये। भगवान श्रीराम ने रामराज्य दिया और श्रीकृष्ण ने कृष्णराज्य। उन्होंने अपने व्यक्तित्व पर काम किया और राज्य–राष्ट्र को केंद्र में रखा। यह हमारे पूर्वजों की गलती है कि हमने अपनी पीढ़ियों को भगवान राम और श्रीकृष्ण राज्य के बारे में नहीं बताया। हमें स्वामी विवेकानंद से सीखना होगा। केवल विशेष दिनों में उनके चित्र पर फूल माला चढ़ाने से कुछ नहीं होगा। देश में क्या हो रहा है, आपका विषय क्या है और इतिहास क्या है, इसकी जानकारी रखें। चकाचौंध और प्रपंच से बाहर निकलें। यह आपको कायरता सिखाता है। अपने माता–पिता के पैसों पर नहीं अपने बल पर ईमानदारी से कंफर्ट जोन से बाहर निकलते हुए खड़े हों। व्यक्ति के रूप में बलवान बनकर उभरो तो किसी भी परेशानी का सामना करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

(प्रोफेसर पवन सिन्हा गुरुजी का उद्बोधन)

आयोजक मंडल| भव्य कार्यक्रम करने वाली तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल और पावन चिंतन धारा आश्रम की टीम प्रोफेसर पवन सिन्हा गुरु जी के साथ।